

वैक्सीन कूटनीति: वैश्विक स्वास्थ्य एवं शांतिसंधि के परिप्रेक्ष्य में...

डॉ. सुभाष भिमराव दोंडे

सहयोगी प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान प्रभाग, कीर्ति महाविद्यालय, दादर (प.) मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

'सर्वे भवंतु सुखिनः' उक्ति के अनुरूप चेचक से लेकर कोविड 19 महामारी तक 'वैक्सीन कूटनीति' के तहत वैश्विक स्वास्थ्य बरकरार रखने के लिए एक राष्ट्र ने अन्य देशों के लिये टीकों के विकास या वितरण में अहम भूमिका निभाई है। रोग प्रतिबंधक टीके (वैक्सीन) मानव जाति की सबसे बड़ी सकारात्मक कृतियों एवं उपलब्धियों में से एक हैं। किन्तु केवल बीमारीयों को खत्म करके वैश्विक स्वास्थ्य में सुधार लाने तक सीमित न रखकर, टीकाकरण को विश्व के देशों में परस्पर वैमनस्य और आपसी द्वंद्व मिटाकर एवं संघर्ष का सटीक समाधान ढूँढ़कर, शान्ति एवं खुशहाली लाने के लिये सकारात्मक पहल के रूप में देखा जाना चाहिए। टीकों के निर्माण से जुड़े एडवर्ड जेन्नर और लुई पाश्चर जैसे दुनिया के महानतम वैज्ञानिकों ने विज्ञान एवं मानवता को देशों की सीमा एवं राजनैतिक विचारधारा के परे रखने की बात कही थी। 'वैक्सीन राष्ट्रवाद' और 'वैक्सीन कूटनीति' यह दोनों परस्पर विरोधी धारणायें समय के साथ बदलती दिखाई देती हैं; और इन दोनों में संतुलन बने रहने की नितांत आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के चलते आने वाले मुश्किल समय में मानवता को कोविड 19 पश्चात निपाह, इबोला, स्वाइन फ्लू और न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात झुनाटिक रोगों का सामना करना पड़ सकता है। इन महामारीयों से निपटने के लिये प्रतिबंधक वैक्सीन के निर्माण एवं वितरण में विकसित देशों की 'वसुधैव कुटुंबकम्' नीति बरकरार रहनी चाहिए। प्रस्तुत लेख में वैक्सीन क्या है? और इनका निर्माण कैसे किया जाता है? इस वैज्ञानिक जानकारी के साथ चेचक से लेकर कोविड 19 तक वैक्सीन से जुड़े सभी कूटनीतिक पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्द: वैक्सीन कूटनीति, वैक्सीन राष्ट्रवाद, चेचक, पीतज्वर, पोलियो, संघर्ष-विराम, शीत-युद्ध, क्षीणीकृत रोगाणु, नारू-कृमी, रोटावायरस, जलान्तक, कुकर खांसी

प्रस्तावना

वैक्सीन कूटनीति यह वैश्विक स्वास्थ्य कूटनीति का हिस्सा है, जिसमें एक राष्ट्र अन्य देशों के साथ संबंधों को मज़बूत करने के लिये टीकों के विकास या वितरण का उपयोग करता है। सहयोगात्मक प्रयासों के तहत इसमें जीवन रक्षक टीकों और संबंधित तकनीकों का संयुक्त विकास किया जाना भी शामिल है, जहाँ विभिन्न देशों के वैज्ञानिक, संबंधित देशों के बीच राजनयिक संबंधों एवं विचारधारा को महत्त्व दिये बिना सहयोग के लिये एक साथ आते हैं। यह किसी भी देश को पड़ोसी देशों और संपूर्ण विश्व के साथ अपनी विदेश नीति तथा राजनयिक संबंधों को बढ़ावा देने का एक अभिनव अवसर प्रदान कर सकता है। इतिहास के पन्नों में देखेंगे तो रोग प्रतिबंधक वैक्सीन मानव जाति की निःसंदेह सबसे बड़ी सकारात्मक कृतियों एवं उपलब्धियों में से एक हैं। चेचक, पीतज्वर, हैजा, प्लेग, पोलियो, इंप्लुएंजा आंत्र-ज्वर जैसे संक्रमण से फैलने

वाले रोग को खत्म करने की टीकों की उल्लेखनीय क्षमता के कारण, मानव इतिहास पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पिछले कुछ दशकों में, टीकों ने चेचक से लेकर पोलियो का उन्मूलन किया है। वैश्विक पोलियो अभियान द्वारा सन 1988 से 2011 दौरान पोलियो मामलों की संख्या 350,000 से घटकर 2011 में 650 हो गई। यह बीमारी आज स्वाभाविक रूप से केवल अफगानिस्तान, पाकिस्तान और नाइजीरिया इन तीन देशों में ही सीमित रूप से फैलती हुई दिखाई देती है, एक सदी पूर्व जिसकी चपेट में विश्व के 125 से अधिक देश थे। किन्तु केवल बीमारीयों को खत्म करके वैश्विक स्वास्थ्य में सुधार लाने तक सीमित न रखकर, टीकाकरण को विश्व के देशों में परस्पर वैमनस्य और आपसी द्वंद्व मिटाकर एवं संघर्ष का सटीक समाधान ढूँढ़कर, शान्ति एवं खुशहाली लाने के लिये सकारात्मक पहल के रूप में देखा जाना चाहिए। इसलिये वैक्सीन कूटनीति किसी देश के राजनैतिक

संबंधों और उसके अन्य देशों के प्रभाव को सुधारने के लिए वैक्सीन का उपयोग है। फ़िलहाल कोविड 19 टीकों की आपूर्ति के संदर्भ में वैक्सीन कूटनीति चर्चा में है लेकिन इतिहास के झरोखों से देखेंगे तो इसने चेचक, पोलियो और अन्य कई वैक्सीन के निर्माण एवं वितरण में एक अहम भूमिका निभाई थी।

1. परिकल्पना

समस्त मानवता को अभिशापित करने वाला जानलेवा संक्रामक रोगों का एवं उनके नियंत्रण या उन्मूलन में वैक्सीनों का आनुषंगिक सफर यह देश की सीमाओं एवं विचारधाराओं के परे वैक्सीन कूटनीति के उपलब्धियों की सकारात्मक दास्तान हैं

2. क्रिया-विधि

प्रस्तुत लेख असंरचित और गैर-संख्यात्मक डेटा पर निर्भर रहकर समस्या के सटीक स्वरूप को हल करने के लिए प्राथमिक एवं प्रकाशित साहित्य या डेटा का समीक्षात्मक विश्लेषण है।

3. विचार विमर्श

टीका (वैक्सीन) कूटनीति के वैश्विक स्वास्थ्य एवं सहयोग से जुड़े ऐतिहासिक पहलुओं को उजागर करने से पहले टीका (वैक्सीन) क्या है? और इनका निर्माण कैसे किया जाता है? इस संदर्भ में प्रसंगोचित वैज्ञानिक जानकारी यहाँ अनुषंगिक एवं क्रमप्राप्त है।

वैक्सीन क्या है?

टीका (वैक्सीन) एक परजीवी रोगकारी जीवाणु अथवा विषाणु के शरीर का उपयोग करके बनाया गया द्रव्य है जिसके प्रयोग से शरीर में किसी रोग विशेष से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है। शरीर की विभिन्न रक्षापंक्तियों को भेदकर रोगाणु शरीर में प्रवेश कर घातांकी स्तर पर पनपते हैं और जीवविष (toxin) उत्पन्न कर अपने मेजबान के शरीर में रोग उत्पन्न करते हैं। इनके फलस्वरूप शरीर की कोशिकाएँ भी जीवविष तथा उसके उत्पादक सूक्ष्म रोगाणु की आक्रामक प्रगति के विरोध में स्वाभाविक प्रतिक्रिया द्वारा प्रतिजीवविष (antitoxin) अथवा प्रतिरक्षी (antibody) उत्पन्न करती हैं। जिस रोगाणु के प्रतिरोध के लिए प्रतिरक्षी उत्पन्न होते हैं वे उसी रोगाणु पर अपना घातक प्रभाव डालते हैं। यदि किसी के शरीर में किसी रोगविशेष के रोगनिरोधी प्रतिरक्षी उस रोग के जीवाणु द्वारा संक्रमण होने के पूर्व ही प्रचुर मात्रा में विद्यमान हों, तो वह रोगाणु रोग उत्पन्न करने में असमर्थ रहता है। संक्रमण होने पर रोगनिरोधी प्रतिरक्षियों की उत्पत्ति के कारण यह देखा गया है कि एक बार रोग हो जाने पर वही रोग दूसरी

बार कुछ काल (समय) तक नहीं होता। एक बार चेचक हो जाने पर दूसरी बार इस रोग के होने की संभावना प्रायः नहीं रहती। कुछ बालरोग शैशवकाल में हो जाने पर युवा या जरावस्था में पुनः नहीं होते। इसी वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर कृत्रिम टीकों (वैक्सीन) द्वारा रोगनिरोधी प्रतिरक्षी शरीर में प्रवेशकर, रोगविशेष की रोकथाम सफलता पूर्वक की जाती है। टीका लगाने का मुख्य प्रयोजन बिना रोग उत्पन्न किए शरीर में रोगनिरोधी प्रतिरक्षी का निर्माण करना है। प्राकृतिक रूप से तो प्रतिरक्षी रोगाक्रमण की प्रतिक्रिया के कारण बनते हैं, परंतु टीके द्वारा एक प्रकार का शीतयुद्ध छेड़कर शरीर में प्रतिरक्षी का निर्माण कराया जाता है। रोग उत्पन्न करने में असमर्थ मृत (dead) या क्षीणीकृत (attenuated) रोगाणुओं का शरीर में प्रवेश होते ही प्रतिरक्षियों का उत्पादन होने लगता है। मृत (dead) या निस्तेज / क्षीणीकृत (attenuated) अवस्था में रोगाणुओं का उपयोग आवश्यक होता है। की आक्रामक शक्ति का निर्बल कर उन्हें पहले निस्तेज कर दिया जाता है जिससे। ऐसी अवस्थामें जो रोगाणु में रोगकारी क्षमता तो नहीं रहती किंतु प्रतिरक्षी बनाने की शक्ति बनी रहती है अतः रोगनिरोधी प्रतिरक्षी उत्पन्न करने के लिए मृत जीवाणु अथवा निस्तेजित जीवाणु का प्रयोग टीके (वैक्सीन) द्वारा किया जाता है। रोगनिरोधी टीके के लिए जो द्रव काम में लाया जाता यह वास्तव में मृत अथवा निस्तेजित जीवाणुओं का निलंबन (suspension) होता है। भारत में हर साल करीब 17,00,000 बच्चे विभिन्न प्रकार के बीमारियों के कारण मर जाते हैं। इसलिए बच्चों के शुरुआती पहले कुछ वर्षों में लगातार टीके लगवाने की जरूरत पड़ती है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार बच्चों में 50 % मौतें कुकर खांसी से, 30 % मौतें पोलियो से और करीब 20 % मौतें खसरे से होती हैं।

वैक्सीन कूटनीति का ऐतिहासिक सफरनामा

वैक्सीन कूटनीति लगभग उतनी ही पुरानी है जितनी कि स्वयं वैक्सीन। 1798 में, ब्रिटिश डॉक्टर एडवर्ड जेन्नर ने 'चेचक के टीके के कारणों और प्रभावों' पर अनुसंधान प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने मानव चेचक विषाणु (virus) के खिलाफ टीका लगाने के लिए गोशितला / गोमसूरी (cowpox) विषाणु के उपयोग किया और इस तकनिक को वैक्सीनेशन (टिकाकरण) और वैक्सीन का नाम दिया। सन 1800 साल तक, जेन्नर का चेचक टीका इंग्लैंड में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया गया था और ब्रिटिश (इंग्लिश) चैनल के उस पार को फ्रांस में भेज दिया गया था। एक दशक के भीतर, नेपोलियन ने हुक्मनामा या फरमान दिया कि फ्रांसीसी साम्राज्य के

सभी प्रमुख शहरों में वैक्सीन विभागों की स्थापना की जानी चाहिए। 1811 तक, जेन्नर को फ्रांस के संस्थान के विदेशी सदस्य के रूप में चुना गया। विशेष रूप से उल्लेखनीय, फ्रांस में चेचक के टीके के उपयोग और विकास में जेन्नर की भागीदारी इंग्लैंड और फ्रांस के बीच लगभग निरंतर युद्ध के समय में हुई। जेन्नर चाहता था कि युद्ध को विज्ञान में बाधक नहीं होना चाहिए और राष्ट्रीय सीमाओं की परवाह किए बिना सभी को टीकाकरण उपलब्ध हो। जेन्नर ने व्यापक रूप से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रूस, स्पेन, और तुर्की और मूल अमेरिकी जन-जातियों, कॅनडा और मैक्सिको में चेचक के टीके बनाने की और उन्हें सुई से लगाने की विधिवत जानकारी को सलाह के साथ साझा किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त 1950 के दशक की शुरुआत में, अमेरिका और रूस के बीच चल रहे 'शीतयुद्ध' या 'शस्त्र सज्जित शान्ति' दौरान पोलियो महामारी दोनों देशों में विशेष रूप से छोटे बच्चों में कहर बरपा रही थी। इस महामारी के आगे विवश होकर 1956 में अपने शीतयुद्ध के मौन को तोड़ने के लिए सोवियत यूनियन को मजबूर किया। चिकित्सा इतिहासकार सोल बेनीसन (Saul Benison) के शब्दों में कहें तो, ऐसी मुश्किल घड़ी में किसी विशिष्ट राजकिय विचारधारा के चिपकाव से उन्हें इस महामारी से मुक्ति नहीं मिलने वाली थी। सोवियत विषाणुतज्ञ मिखाइल चुमाकौफ (Mikhail Chumakov) ने बाद में अमेरिकी शोधकर्ता अल्बर्ट सॅबीन (Albert Sabin) के साथ मिलकर एक जीवित (live) एवं मौखिक (oral) पोलियो वैक्सीन विकसित की, जो कि उस दौरान 1954 में जोनास साल्क (Jonas Salk) के इंजेक्शन द्वारा दिये जाने वाली मृत वैक्सीन से बेहतर थी। शीतयुद्ध की छत्रछाया में झुलस रहे कई अमेरिकियों को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सॅबीन पोलियो वैक्सीन संयुक्त राज्य अमेरिका में पेश किये जाने के पूर्व इसकी सुरक्षा और प्रभावकारिता साबित करने के लिए पहली बार लाखों सोवियत बच्चों में इसका परीक्षण किया गया था।

जलान्तक (रेबीज) की नई वैक्सीन फ्रांस में लुई पाश्चर द्वारा लगभग एक सौ साल बाद विकसित किया गया था। 1888 में पेरिस में अपने संस्थान के उद्घाटन के एक भाषण में, पाश्चर ने कहा कि *"विज्ञान कोई देश नहीं जानता, क्योंकि ज्ञान मानवता का है, और यह वो मशाल है जो दुनिया को रोशन करती है"*। सदी के करीब आने से पहले, पाश्चर संस्थान के वैज्ञानिक अन्य देशों की प्रयोगशालाओं में रेबीज के टीके बनाने और लगाने की क्रिया-विधि के लिए एक नेटवर्क बनाने के लिए फैल गए। फ्रांस और स्विटजरलैंड में काम करने वाले यूक्रेन

के एक यहूदी वैज्ञानिक डॉ. वाल्डेमर हाफ़किन ने अपने प्रोटोटाइप हैजे और प्लेग के टीकों से हजारों लोगों का टीकाकरण करने के लिए भारत की यात्रा की, लेकिन सबसे पहले उन्होंने अपने टीकों का परीक्षण खुद पर किया। आज, मुंबई में उन्ही के नाम से कार्यरत हाफ़किन संस्थान अनेक किस्मों के टीकों पर अनुसंधान एवं निर्माण करने में जुटी है।

शीतयुद्ध की वैक्सीन कूटनीति की विरासत अब अफ्रीका और मध्य एशिया के पोलियो गढ़ रहे स्थानिक क्षेत्रों में महसूस की जाती है, जहां पिछले दशकों के दौरान, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पोलियो टीकाकरण अभियान को सफल करने के लिए संघर्ष विराम पर बातचीत की थी। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के प्रयासों के माध्यम से, 1993 के बाद से अफगानिस्तान में शांति के तथाकथित दिनों के दौरान हर साल सामूहिक टीकाकरण किया गया है। गृहयुद्ध में झुलस रहे सूदान में 'नारू कृमी' (गिनी-वर्म) के संक्रमण से परजीवी 'नारू-रोग' (Dracunculiasis) की घटनाओं को कम करने के लिए पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर की मध्यस्थता में 1995 में छह मास के युद्धविराम की बातचीत सफल रही थी। उस समय 'नारू-कृमी संघर्ष विराम' के नाम से जाना जानेवाला, सूदानी नागरिक संघर्ष के इतिहास में यह सबसे लंबे समय तक चला संघर्ष विराम था। राष्ट्रीय टीकाकरण के दिनों ने सिएरा लियोन इस छोटे से पश्चिम अफ्रीकी देश में अस्थायी रूप से गृहयुद्ध को रोक दिया था। यूरोप ने हैजा, प्लेग और पीतज्वर (पीला बुखार) के प्रसार को रोकने के लिए बहुपक्षीय सहयोग के लिए अपना पहला 'अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य-रक्षा सम्मेलन' आयोजित किया। इस तरह के प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय सैनिकी संधियों और सम्मेलनों की एक श्रृंखला बनी और 'पैन अमेरिकी स्वास्थ्य संगठन' और अंततः 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की स्थापना हुई।

आज सॅबीन की मौखिक पोलियो वैक्सीन वैश्विक पोलिओ उन्मूलन प्रयासों के लिए अग्रणी मानी गयी है। इसी तरह, 1962 और 1966 के बीच, रूस ने चेचक के टीके के लिए फ्रीज-ड्राईंग तकनीक का अग्रदूत बनकर विकासशील देशों में वैश्विक चेचक उन्मूलन अभियानों को समर्थन देने के लिए वैक्सीन की 450 मिलियन खुराक प्रदान की, जबकि अमेरिका ने इस अभियान में प्रमुख वित्तीय सहायता प्रदान की थी। इस तरह के अंतरराष्ट्रीय सहयोगात्मक प्रयासों के कारण, 1970 के दशक के अंत तक चेचक का वैश्विक उन्मूलन हो पाया। आपसी शीतयुद्ध एवं संघर्ष के बावजूद इन सभी सहयोगात्मक प्रयासों की सफलता इस बात पर निर्भर थी की प्रत्येक वैज्ञानिक अपने कूटनीतिक संपर्क

(liaisons) को संयुक्त वैज्ञानिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपनी अलग अलग विचारधाराओं को दूर रखने में कितने सफल रहते हैं।

20 वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में वैक्सीन कूटनीति विश्व स्वास्थ्य संघटन की छत्रछाया में फली फुली जब स्वास्थ्य के लिए एक पुल के रूप में – मानवतावादी संघर्ष-विराम परियोजना में टीके और टीकाकरण का उपयोग 1980 और 1990 के दशक में अफगानिस्तान, अंगोला सहित एक अन्य देशों में जैसे चेचन्या, कांगो, अल साल्वाडोर, इराक, लेबनान, फिलीपिन्स, सिएरा लियोन, श्रीलंका और सुदान में तथाकथित 'शांति के दिनों' के लिए किया गया था। दुनिया भर के बच्चों और नवजात शिशुओं में गंभीर दस्त होने का सबसे सामान्य कारण है रोटावायरस (rotavirus)। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकलनों के मुताबिक वर्ष 2013 में रोटावायरस बीमारी के कारण लगभग 215,000 मौतें हुई थीं। सबसे अधिक मौतें विकासशील देशों में होती हैं। गावि (GAVI) एलायंस के प्रारंभ होने के बाद, कई विकासशील देशों ने पहली बार रोटावायरस और हिमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी (एचआईबी) का मुकाबला करने के लिए टीकों का उपयोग किया, और न्यूमोकोकल वैक्सीन के लिए एक नया टीका विकसित किया गया। आंशिक रूप से इन हस्तक्षेपों के कारण, बाल मृत्यु की दर लगभग आधे से कम हो गई थी। 2008 में दशकों के बाद जब अमेरिका में शहरी पीले बुखार के प्रकोप के दौरान पीले बुखार के टीके की आपूर्ति कम हो गई थी, तो पड़ोसी पराग्वे देश ने इस देश में टीका उपलब्ध हो यह सुनिश्चित करने में मदद की थी। निःसंदेह टीके मानव जाति द्वारा अब तक के सबसे शक्तिशाली अंतःक्षेप या व्यवधान हैं जिन्हें वे बचाते हैं। एक अनुमान के अनुसार, आधुनिक टीकों ने तुलना में अधिक लोगों का जीवन बचाया है; जो 20 वीं शताब्दी के दौरान दो विश्व युद्धों में मारे गए थे।

विश्व को पोलिओ से छुटकारा पाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अक्टूबर 2003 में एक बड़ी बाधा का सामना किया जब उत्तरी नाइजीरिया में तीन क्षेत्रों में टीकाकरण को बेबुनियादी अफवाहों के कारण रोक दिया गया था। अफवाह यह थी की वैक्सीन में एचआईवी (HIV) वायरस और हार्मोन की मिलावट है जो महिलाओं को बांझ बनाने के लिए दिया गया है। कुछ इस्लामी मौलवियों ने सुझाव दिया की टीका अफ्रीका जन-संख्या कम करने के लिए एक पश्चिमी साजिश का हिस्सा है। अर्थात पोलियो वैक्सीन द्वारा एचआईवी फैलने का विचार नया नहीं है। हालांकि, यह सिद्धांत, इस धारणा पर आधारित था की 1950 के दशक में टीके के निर्माण में एसआयव्ही (SIV) –संक्रमित चिंपाजी ऊतक

का उपयोग किया गया था। एसआयव्ही यह सभी मनुष्य-सदृश जानवरों को संक्रमित करनेवाला विषाणु है जो एड्स के एचआयव्ही (HIV) में उत्पन्नवर्तित (mutation) होने का खतरा था। टीकाकरण पर लांछन तब भी लगा और लोगों का विश्वास तितर बितर हुआ, जब बिन लादेन और उसके परिवार की पहचान कराने के उद्देश्य से उनका डीएनए सैम्पल इकट्ठा करने के लिए अमेरिका की खुफिया एजेन्सी सीआयए (CIA) ने कूटनीतिक अपरिपक्वता का प्रदर्शन करते हुए पाकिस्तानी इलाके में एक दिखावे का जाली हेपेटाइटिस बी टीकाकरण परियोजना को अंजाम दिया। यह प्रयास स्पष्ट रूप से विफल रहा, लेकिन वहाँ के लोगों में अविश्वास का जो माहौल बना उसकी वजह से वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों में निश्चित रूप से बाधा आयी है।

इतिहास ने हमें सिखाया है की निम्न और मध्यम-आय वाले देशों ने 2009 के एच1एन1 (H1N1) इन्फ्लुएंजा महामारी जैसी गंभीर बीमारी की घटनाओं के दौरान टीकों तक पहुंचने के लिए संघर्ष किया है। यह संघर्ष 'वैक्सीन राष्ट्रवाद' (vaccine nationalism) की घटना के कारण था वैक्सीन राष्ट्रवाद तब होता है जब उच्च आय वाले देश दुनिया की बाकी आबादी के बारे में सोचे बिना अपने नागरिकों के लिए वैक्सीन खुराक खरीदते हैं। इन उच्च आय वाले देशों के अपने देश के लिए टीके सुरक्षित करने के बाद फिर अन्य देशों में वैक्सीन की वैश्विक पहुंच होती है। वैक्सीन राष्ट्रवाद और वैक्सीन कूटनीति यह दोनों परस्पर विरोधी है। आज कोविड 19 विषाणु जनित महामारी के रूप में पूरी दुनिया ने एक भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, समाजशास्त्रीय और राजनीतिक चुनौती का सामना किया है और 'वैक्सीन राष्ट्रवाद' की जड़ पक्की की है, जिसके तहत हर एक देश यह सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिकता दे रहे हैं की सबसे पहले उनके नागरिकों को कोविड 19 विषाणु से निपटने के लिए टीकाकरण के लिए वैक्सीन, मरीजों के लिए वेंटिलेटर, और दवाओं की कमी न हो।

भारत की वैक्सीन कूटनीति

'सर्वे भवंतु सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसे सांस्कृतिक धरोवर के अनुरूप कोविड-19 महामारी प्रतिबंध करनेवाली वैक्सीन के जरिए भारत कोरोना के खिलाफ जंग में विश्व के कई बड़े देशों से आगे है। भारत ने अबतक बड़ी संख्या में अन्य देशों को कोरोना महामारी से निपटने के लिये हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन, रेमेडिसविर और पैरासिटामोल दवाइयाँ तथा साथ ही डायग्नोस्टिक किट, वेंटिलेटर, मास्क, दस्ताने और अन्य

मेडिकल उपकरण प्रदान किये थे। इसके उपरांत कई पड़ोसी देशों के लिये क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण कार्यशालाओं का भी आयोजन किया है। अपनी वैक्सीन कूटनीति के परिप्रेक्ष्य में भारत ने अबतक मालदीव, भूटान, बांग्लादेश और नेपाल में वैक्सीन की शिपमेंट पहुंचाने का काम शुरू कर दिया है जबकि म्यांमार और सेशेल्स के साथ श्रीलंका, अफगानिस्तान और मॉरीशस से आवश्यक नियामक मंजूरी की पुष्टि के बाद वैक्सीन की शिपमेंट पहुंचायी जाएगी। भारत ने कई देशों को उपहार के तौर पर वैक्सीन पहुंचाई है- जैसे बांग्लादेश को 20 लाख, म्यांमार को 15 लाख, नेपाल को 10 लाख, भूटान को 1.5 लाख, मॉरीशस एवं मालदीव को एक-एक लाख वैक्सीन की डोस (खुराक) भेजी गई है। इसके अलावा सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, और मोरक्को को यह टीके व्यवसायिक आपूर्ति के रूप में भेजे जा रहे हैं। इससे भारत की वैक्सीन की विश्वसनीयता भी स्थापित हो रही है। यह भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के अनुरूप भी है। भारत की क्षेत्रीय वैक्सीन कूटनीति का एकमात्र अपवाद पाकिस्तान होगा; जिसने एस्ट्रोज़ेनेका (AstraZeneca) वैक्सीन के उपयोग को मंजूरी दे दी है, किंतु अभी तक न तो उसने इस संबंध में भारत से अनुरोध किया है और न ही चर्चा की है। जहाँ एक ओर समृद्ध पश्चिमी देश, विशेष रूप से यूरोप के देश और अमेरिका अपनी विशिष्ट समस्याओं का सामना कर रहे हैं, वहीं भारत अपने पड़ोसियों और अन्य विकासशील तथा अल्प-विकसित देशों की सहायता करने में जुट गया है।

पिछले कुछ दशकों से भारत की विश्वव्यापी छवि 'फार्मसी ऑफ द वर्ल्ड' अर्थात् 'दुनिया का दवाखाना' के रूप में उभरकर आयी है। भारत जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक है। वैश्विक दवा उत्पादन का 20 प्रतिशत यहीं होता है और दुनिया में टीके की 62 प्रतिशत मांग की पूर्ति यहीं से होती है। दुनिया का सबसे बड़ा कोविड-19 टीकाकरण अभियान चलाने के साथ साथ भारत ने लगातार प्रयास किए हैं कि कोविड वैक्सीन को बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) से रियायत दी जाए और संयुक्त राष्ट्र के संकल्प के तहत विश्व के कोने-कोने तक टीके की पहुंच सुनिश्चित हो। कोरोना महामारी के रूप में वर्तमान गंभीर स्वास्थ्य संकट के समय में भारत का यह कदम उसे वैश्विक नेतृत्व की भूमिका का अनूठा अवसर प्रदान करता है। भू-राजनीतिक विचारों को एक तरफ रखते हुए यह समझना अनिवार्य है कि वैक्सीन कूटनीति रणनीतिक रूप से भारत को एक जिम्मेदार वैश्विक नेता के रूप में उभरने का मौका देती है।

उपसंहार

समस्त मानवता को लाभान्वित करने वाली एडवर्ड जेन्नर के चेचक प्रतिबंधक वैक्सीन की खोज उपरांत वैक्सीन कूटनीति का भी जन्म हुआ। बिते हुये वक्र के साथ अंतरराष्ट्रीय विदेशनीति का एक अविभाजित अंग बनकर वैक्सीन कूटनीति पूरे विश्व में फैली और विकसित हुई। पिछले दो सदियों में संक्रामक और पशुजन्य (zoonotic) रोगों का स्वरूप, व्याप्ति और फैलाव बदला; वैसे ही वैक्सीन बनाने की सोच और तरीका भी बदला। साथ ही साथ देशों के बीच आपसी संघर्ष एवं तनाव के मुद्दे और उन मुद्दों के कार्य-कारण भाव भी बदले है। किन्तु संघर्ष विराम के लिए या संघर्ष विराम के दौरान वैक्सीन कूटनीति के तहत सामूहिक टीकाकरण हर स्थिति में एक जैसा ही रहा है। दूसरे महायुद्ध उपरांत अमरीका और रूस के बीच बरसों शीतयुद्ध चला; किन्तु अपने पिढ़ी को पोलिओ से सुरक्षा कवच प्राप्त हो इस उद्देश्य से दोनों देशों के आपसी सहयोग से प्रभावशाली पोलिओ टीकों का निर्माण हुआ; जो आगे चल के विश्व स्वास्थ्य संघटन द्वारा पोलिओ उन्मूलन के लिए उपयोग में लाया गया। मानवतावादी दृष्टि से और 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के अनुरूप भारत पाकिस्तान को बरसों चले गुरिल्ला युद्ध के बावजूद कोरोना वैक्सीन की खुराक मुहैया करा सकता है; बशर्ते कि सीमा के उस पार से वैसी पेशकश हो और उसके पहले वहाँ के प्रजा को कोरोना से बचाने की राजा को प्राथमिकता हो। पुराने जमाने में अमेरिका रूस या यूरोप में विकसित देशों में वैक्सीन पर अनुसंधान होता था; टीकों के निर्माण में इन सम्पन्न देशों की अहम भूमिका होती थी। किन्तु समकालीन वक्र में जब पूरा विश्व कोरोना महामारी की चपेट में है, यह जिम्मेदारी अब सशक्त भारत और चीन जैसी उभरती हुयी महासत्ताओं के कंधों पर आ खड़ी हुयी है। जलवायु परिवर्तन एवं भूमंडलीय तापक्रम वृद्धि के चलते आने वाले मुश्किल समय में मानवता को कोविड 19 पश्चात निपाह, इबोला, स्वाइन फ्लू और न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात पशुजन्य रोगों का सामना करना पड़ सकता है। इन महामारियों से निपटने के लिये प्रतिबंधक वैक्सीन के निर्माण एवं वितरण में विकसित देशों की मानव कल्याणकारी 'वसुधैव कुटुंबकम्' नीति बरकरार रहनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. चावला पी. सी. (2012) बहु उपयोगी वैक्सीन, नेशनल बुक ट्रस्ट.
2. होटेज पीटर जे. (2009) वैक्सीन कुटनीति – विदेश नीति <https://foreignpolicy.com/2009/11/19/vaccine-diplomacy/>
3. होटेज पीटर जे. (2014) वैक्सीन कुटनीति: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और भविष्य की दिशाएं पीएलओएस निग्लेक्टेड ट्रॉपिकल डिजीजेस खंड 8(6): इ 2808. Doi: 10.1371/journal.pntd.0002808
4. राव प्रणति (2021) वैक्सीन कूटनीति का इतिहास <https://takshashila.org.in/the-history-of-vaccine-diplomacy>
5. भट्टाचार्य शाओनी (2003) नाइजीरियाई टीका परीक्षण संदूषण के दावे का खंडन. न्यू सायंटिस्ट <https://www.newscientist.com/article/dn4392-nigerian-vaccine-tests-refute-contamination-claim/>
6. पंत हर्ष (2021) वैक्सीन कूटनीति — भारत के लिए वैश्विक नेतृत्व का सुनहरा अवसर. ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन. <https://www.orfonline.org/research/indias-vaccine-diplomacy/>
7. सी.आय.ए. के नकली टीकाकरण अभियान से सभी को खतरा (2013) सायंटिफिक अमेरिकन <https://www.scientificamerican.com/article/how-cia-fake-vaccination-campaign-endangers-us-all/>